किसी भी पूजा का शुभारम्भ देव प्रार्थना से किया जाता है। सबसे पहले देवताओं का नमन करते है, आह्वान करते है और उच्चरित करते है - **ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः, उमा-महेश्वराभ्यां नमः, शची-पुरन्दराभ्यां नमः, वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः, वास्तु देवताभ्यो नमः, कुल देवताभ्यो नमः, ब्राह्माणेभ्यो नमः, स्थान देवताभ्यो नमः, ग्राम देवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो पितृरेभ्यो नमः...'**

इस प्रकार हम विराट् जगत के स्वरूप लक्ष्मी के साथ विष्णु की, उमा के साथ महेश, वाणी शक्ति सरस्वती के साथ ब्रह्मा के हिरण्यगर्भ स्वरूप के तत्पश्चात् अन्य सभी देवी-देवताओं और अपने पितृजनों, माता-पिता, स्थान देवता, कुल देवता, ग्राम देवता का नमन करते है।

लक्ष्मी के साथ नारायण की प्रार्थना है -

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

विष्णु अपनी शक्ति लक्ष्मी के माध्यम से संसार को गतिशील रखते है। विष्णु जगत पालक है, जगत के पिता है, उनके कार्यों हेतु लक्ष्मी संसार में विचरण करती है और मनुष्य को कर्मों के अनुसार फल प्रदान करती है। सामान्य मनुष्य फल और लक्ष्मी में भेद नहीं कर पाता है। जबकि लक्ष्मी अर्थात् जीवन में प्राप्ति और यह प्राप्ति तभी सुनिश्चित होती है जब जगत के पालक विष्णु अपनी कृपा करते है।

यह सुविदित तथ्य है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की और भगवान शिव ने अपनी जंघा से विष्णु को प्रकट कर जगत के पालना का कार्य उन्हें सौंप कर अपनी तपस्या में पुनः लीन हो गये।

विष्णु आधार देव है और विष्णु के दसावतार - मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध हुए और भविष्य में कल्कि रूप होगा। हर काल में जैसी स्थिति आई उस अनुसार विष्णु ने अवतार लेकर इस जगत की गति को सुनिश्चित किया, इसकी उचित व्यवस्था की जिससे जगत निरन्तर गतिशील रहे।

भगवान विष्णु **'पुरुषोतम'** की उपाधि दी गई है अर्थात् सब पुरुषों में उत्तम, यही उपाधि विष्णु के अवतार श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम के रूप में मिली, श्रीकृष्ण को मिली।

पुरुषोतम मास एक कल्प है, एक अनुष्ठान पर्व है जिस पूरे मास आदि देव विष्णु की आराधना की जाती है और अपने पूरे वर्ष के कार्यों की समीक्षा की जाती है इसलिये इस पुरुषोतम मास में व्रत, उपवास, संयम, दान, धर्म, तीर्थाटन की महिमा है क्योंकि मनुष्य संसार की गति में लिप्त होते-होते भूल जाता है कि उसे यह नर-नारी स्वरूप केवल संसार को पशु रूप में भोगने के लिये नहीं मिला है अपितु अपनी आत्मा का उन्नति कर अपना आत्मकल्याण करने के लिये प्राप्त हुआ है जिससे वह अपने आधार लक्ष्मी-नारायण से पुनः जुड़ सके।

लक्ष्मी नारायण साधना

इस साधना को **पुरुषोत्तम मास** अथवा किसी भी गुरुवार को सम्पन्न कर सकते है। पुरुषोत्तम मास में पति-पत्नी को एक साथ साधना सम्पन्न करनी चाहिये। गृहस्थ साधकों हेतु यह अद्वितीय साधना है।

प्रातः स्नान इत्यादि से निवृत होकर पीले वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठे जाये। अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र और श्रीमंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित **'श्रीलक्ष्मी नारायण यंत्र'** स्थापित करें।

सर्वप्रथम बायें हाथ में जल लेकर उसे दायें हाथ से ढककर निम्न मंत्र पढ़े -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर जल को अपने ऊपर छिड़क ले। फिर आत्म शुद्धि के लिए दायें हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें -

ॐ नारायणाय नमः।
ॐ केशवाय नमः।
ॐ गोविन्दाय नमः।

फिर साधना प्रारम्भ करने से पूर्व सद्गुरुदेव निखिल का पूजन करें और साधना में सफलता के लिये आशीर्वाद की कामना व्यक्त करे तत्पश्चात् एक माला **गुरु मंत्र** का जप करें।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

फिर गुरुदेव की सुक्ष्म उपस्थिति में साधना का संकल्प करें उसके बाद इस साधना का मूल विधान प्रारम्भ होता है।

दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मी-नारायण का ध्यान करें।

ध्यान

लालनात् जननात् लोकान् लक्ष्मीत्यभिधीयते
पालनात् रक्षणात् विष्णुः जगतः पितरौ नमो नमः।

समस्त लोकों के लालन पालन एवं जन्म देने वाली परम सत्ता लक्ष्मी एवं अखिल भुवनों के स्वामी विष्णु को मैं माता-पिता स्वरूप में बारम्बार प्रणाम करता हूं।

तत्पश्चात् यंत्र का पंचोपचार पूजन कर दांये हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग -

ॐ अस्य मंत्रस्य प्रजापति ऋषि गायत्री छन्दः श्री लक्ष्मी नारायण देवताः मम सर्व पाप विनाशाय, परमेश्वर प्रीत्यर्थे जपे विनियोग।

करन्यास -

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।
नमो तर्जनीभ्यां नमः।
ह्रीं ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः।
श्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः।
श्री लक्ष्मी कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
श्री वासुदेव करतल पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयन्यास -

दायें हाथ की पांचों उंगलियों को मिलाकर निम्न अंगों को प्रत्येक मंत्र के साथ स्पर्श करें।

ॐ हृदयाय नमः।
नमो शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रीं ह्रीं शिखायै वषट्।
ॐ श्रीं श्रीं कवचाय हुं।
श्री महालक्ष्मी नेत्रत्रयाय वौषट्।
श्री वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

तत्पश्चात् प्रत्येक मंत्र के साथ तुलसी दल यंत्र पर अर्पित करें।

ॐ विष्णवे नमः
ॐ लक्ष्मीपतये नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ ऋषिकेशाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ भूतभावनाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः
ॐ प्रजाधिपतये नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ लोहिताक्षाय नमः

तत्पश्चात **श्री माला** से निम्न मंत्र की 11 माला जप करे।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः

जीवन में प्रेम, सांमजस्य, सहभागिती की अभिवृद्धि करने की प्रार्थना करें और परिवार सहित लक्ष्मी-विष्णु आरती सम्पन्न करें। इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है। अगले दिन यंत्र और माला को जल में विसर्जित कर दें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. 490/-